हिमाचल प्रदेश की महत्वपूर्ण वृक्ष प्रजातियों के लिए प्लस ट्री चयन, एसपीए (SPA) विकास, बीज एवं नर्सरी तकनीकों के माध्यम से उत्पादकता वृद्धि पर एक दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम की रिपोर्ट

दिनांक: 07 मार्च 2026

स्थान: हिमाचल प्रदेश वन अकादमी सुंदरनगर, मण्डी

"हिमाचल प्रदेश की महत्वपूर्ण वृक्ष प्रजातियों के लिए प्लस ट्री चयन, एसपीए (SPA) विकास, बीज एवं नर्सरी तकनीकों के माध्यम से उत्पादकता वृद्धि" विषय पर एक दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन दिनांक 07 मार्च 2026 को हिमाचल प्रदेश वन अकादमी सुंदरनगर में किया गया। इस कार्यक्रम का आयोजन भा॰वा॰अ॰शि॰प॰–हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान (HFRI), शिमला द्वारा हिमाचल प्रदेश एकीकृत विकास परियोजना (HP-IDP), सोलन के सहयोग से किया गया। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में कुल 51 प्रतिभागियों ने भाग लिया, जिनमें हिमाचल प्रदेश वन विभाग के फील्ड स्तर के अधिकारी एवं कर्मचारी, तथा HP-IDP के कर्मचारी शामिल थे। प्रशिक्षण का मुख्य उद्देश्य गुणवत्तापूर्ण रोपण सामग्री उत्पादन, प्लस ट्री चयन, बीज उत्पादन क्षेत्र (SPA) विकास, वैज्ञानिक बीज प्रबंधन तथा महत्वपूर्ण रोपण प्रजातियों के लिए आधुनिक नर्सरी प्रबंधन तकनीकों संबंधी तकनीकी ज्ञान एवं फील्ड स्तर की क्षमता को सुदृढ़ करना था।

उद्घाटन सत्र

कार्यक्रम का शुभारंभ उद्घाटन सत्र के साथ हुआ। डॉ. मोहम्मद इब्राहिम, वैज्ञानिक-ई एवं प्रशिक्षण समन्वयक ने मुख्य अतिथि डॉ. संदीप शर्मा, निदेशक-लिंक एवं समूह समन्वयक (अनुसंधान), HFRI, शिमला; विशिष्ट अतिथि श्री सुभाष चंद प्राशर, भारतीय वन सेवा, निदेशक, हिमाचल प्रदेश वन अकादमी, सुंदरनगर; श्री पियूष शर्मा, उप निदेशक, हिमाचल प्रदेश वन अकादमी, सुंदरनगर; तथा श्री देवेंद्र डोगरा, उप निदेशक, हिमाचल प्रदेश वन अकादमी, सुंदरनगर का स्वागत किया।

डॉ. मोहम्मद इब्राहिम ने प्रशिक्षण कार्यक्रम की रूपरेखा प्रस्तुत करते हुए इसके उद्देश्यों, प्रमुख विषयों एवं अपेक्षित परिणामों की जानकारी दी। अपने संबोधन में डॉ. संदीप शर्मा ने रोपण वानिकी में वैज्ञानिक विधियों को अपनाने, गुणवत्तापूर्ण रोपण सामग्री के उपयोग तथा नर्सरी तकनीकों को सुदृढ़ करने की आवश्यकता पर बल दिया, जिससे पौधरोपण की उत्पादकता एवं स्थायित्व में वृद्धि सुनिश्चित की जा सके।

तकनीकी सत्र

तकनीकी सत्रों को रोपण उत्पादकता एवं नर्सरी प्रबंधन से संबंधित प्रमुख विषयों के आधार पर आयोजित किया गया।
प्रथम तकनीकी सत्र में डॉ. संदीप शर्मा, वैज्ञानिक-जी एवं समूह समन्वयक (अनुसंधान) द्वारा "गुणवत्तापूर्ण रोपण सामग्री (QPM) का महत्व एवं QPM उत्पादन हेतु आधुनिक नर्सरी तकनीकें" विषय पर व्याख्यान दिया गया। इस सत्र में उच्च आनुवंशिक गुणवत्ता वाली पौध सामग्री तथा मानकीकृत नर्सरी प्रथाओं की भूमिका पर प्रकाश डाला गया।

हिमाचल प्रदेश वन विभाग के नर्सरी प्रोटोकॉल पर एक महत्वपूर्ण सत्र श्री देवेंद्र डोगरा, उप निदेशक, हिमाचल प्रदेश वन अकादमी, सुंदरनगर द्वारा लिया गया। उन्होंने वन विभाग द्वारा अपनाई जाने वाली मानक नर्सरी पद्धतियों, जैसे बीज प्रबंधन, बुवाई तकनीक तथा गुणवत्तापूर्ण पौध उत्पादन सुनिश्चित करने हेतु पौधों के रखरखाव के बारे में विस्तार से जानकारी दी।

अपराह्न सत्र में डॉ. अश्विनी तपवाल, वैज्ञानिक-एफ ने "माइकोराइजा एवं जैव नियंत्रण एजेंट्स के माध्यम से वन नर्सरियों का पर्यावरण अनुकूल प्रबंधन" विषय पर व्याख्यान प्रस्तुत किया, जिसमें नर्सरी स्वास्थ्य प्रबंधन के लिए जैविक एवं सतत उपायों पर विशेष जोर दिया गया।

अंतिम तकनीकी सत्र में डॉ. मोहम्मद इब्राहिम, , वैज्ञानिक-ई ने "रोपण सामग्री सुधार हेतु बीज उत्पादन क्षेत्र (SPA) विकास एवं प्लस ट्री चयन" विषय पर व्याख्यान दिया तथा श्रेष्ठ वृक्षों की पहचान एवं SPA स्थापना की वैज्ञानिक प्रक्रियाओं को विस्तार से समझाया।

समापन सत्र

कार्यक्रम का समापन (Valedictory) सत्र के साथ हुआ, जिसमें प्रतिभागियों को प्रमाण पत्र वितरित किए गए तथा प्रतिभागियों से फीडबैक एवं चर्चा की गई। प्रतिभागियों ने प्रशिक्षण कार्यक्रम की उपयोगिता एवं व्यावहारिक महत्व की सराहना करते हुए इसे अत्यंत लाभकारी बताया। अंत में डॉ. मोहम्मद इब्राहिम, वैज्ञानिक-ई एवं प्रशिक्षण समन्वयक द्वारा धन्यवाद ज्ञापन प्रस्तुत किया गया। उन्होंने मुख्य अतिथि, विषय विशेषज्ञ, प्रतिभागियों तथा आयोजन से जुड़े सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों के प्रति कार्यक्रम के सफल आयोजन हेतु आभार व्यक्त किया।

कार्यक्रम की कुछ झलकियाँ

Benefits for Plants
Enhanced Nutrient Uptake: Mycorrhizal fungi increase the root's absorptive area, enabling plants to access nutrients like phosphorus, nitrogen, and trace minerals that are otherwise inaccessible, often through a process known as chelation.
Improved Water Absorption: The hyphal network allows plants to access water from soil pores that roots cannot reach, making them more drought resistant.
and Disease Suppression:

Introduction

****